ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

''छत्तीसगढ़ का तीज त्यौहार और उसका सामाजिक महत्व''

KEY WORDS:

डॉ. मंजू ताम्रकार

सहायक प्राध्यापक हिन्दी शासकीय काव्योपाध्याय हीरालाल महाविद्यालय अभनपुर, जिला– रायपुर (छत्तीसगढ़)

छत्तीसगढ़ में त्यौहार के बारे में सोचते है तो बारहों महीना मनाया जाता है। ज्यादातर त्यौहार खेती–किसानी से जुड़ा है। देवी–देवताओं की अराधना से हमारे त्यौहार की शुरूवात होती है।

छत्तीसगढ़ में त्यौहार हिन्दी महीनों के आधार पर होता है। एक महीने में दो पक्ष होते है पहला पक्ष कृष्ण पक्ष और दूसरा पक्ष शुक्ल पक्ष। चैत्र मास की अमावस्या को चैत्र अमावस्या होता है इस दिन छत्तीसगढ़ के कुछ क्षेत्रों में 'नया पानी' खाने का प्रचलन है। कुल देवता की पूजा करते है और उनका आशीर्वाद लेते है।

अमावस्या के दूसरे दिन शुक्ल पक्ष शुरू हो जाता है। नवरात्रि प्रारंभ हो जाता है और नवरात्रि के नवें दिन रामनवमी मनाया जाता है। चैत्र माह के पूर्णिमा में उराव जनजाति द्वारा सरहुल पर्व मनाया जाता है इसमें साल वृक्ष की पूजा करते है।

वैशाख मास के शुक्ल पक्ष के तृतीया के दिन अक्ती मनाते है इसी को आखा तीज भी कहते है। यह भी खेती–किसानी से जुड़ा त्यौहार है। अक्ती के दिन खेती का काम शुरू होता है। सुबह से किसान भाई लोग दोना में बिजहा धान को लेकर ठाकुर देवताओं चढ़ाते है। ठाकुर देवता की पूजा पाठ करते है। इसी दिन से पैरा रखने का काम, छेना रखने के काम के साथ–साथ धान बोवाई का मूहुर्त किया जाता है। ये सब करने से पहले कोटवार से मुनादी कर देता है कि ''छाहूर बंजाय बर चलव हो'' किसान भाई लोग बीजहा धान को टोकनी या महुआ का पत्ता या परसा पत्ता के दोने में भरकर छाकुर देवता के दरवाजे ले जाते है। ठाकुर देवता के दरवाजे ले जाते है। जहां बैगा पूजा पाठ करके वहॉ पॉच कुँआरे लड़के के हाथ से कुदाली में खोदकर सबसे पहले धान बाने का नेंग करते है औरा दोना से पानी भरके सिंचाई करते हे। भगवान से प्रार्थना करते है कि इस साल पानी अच्छा बरसे और अच्छी फसल हो।

अक्ती के दिन नही सत्तू गुड़, आम, शकरकंद और घड़े में पानी भरकर शीतला माता में चढ़ाते है। साथ ही अपने सभी कुटुंब परिवार में, सत्तू गुड़, आम, शकरकंद बॉटते है।

शाम को बच्चे गुड़डी– गुड़िया का विवाह रचाते है। बच्चों का उत्साह देखते ही बनता है।

दशमी के दिन गंगा पूजा पर्व सरगुजा क्षेत्र में मनाते है। जिसे गंगा दशमी भी कहते है।

आषाढ़ शुक्ला पक्ष द्वितीया में रथ यात्रा मनाया जाता है। जिसे बस्तर में गोमचा के नाम से मनाते है। सावन मास अमावस्या को हरेली मनाया जाता है। यह किसानों का मुख्य त्यौहार है।

छत्तीसगढ़ का पहला त्यौहार और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। सुबह से स्नान कर घर के स्वामी खेती से संबंधित सभी औजारों को धो साफकर उसकी पूजा करते है। खेतों में जाकर पूजा करके धूप जलाकर आते है और घर की महिलाएँ ऑगन लिपती बुहारती है। साफ–सफाई करके आज के दिन चॉवल के आटे में गुड़ मिलाकर गुरचीला बनाती है पूजा के लिए और सुबह ही पशुधन को आटा, नमक और साथ में वन औषधि को गुँथकर खिलाते है, ताकि पशु निरोग रहे। घर के दरवाजे पर नीम पत्ता लगाया जाता है। इस दिन गेड़ी परंपरा के पीछे एक बात हो सकता है कि सावन के महीने में बरसात के कारण कीचड़ रहता है और घुटने तक पानी भरा रहता है बरसाती पानी में सॉप बिच्छू अनेक कीड़े–मकोड़े से बचने के लिए ही गोड़ी प्रथा है।

श्रावण शुक्ल पंचमी को नागपंचमी होता है। इस दिन पहलवान कुश्ती का खेल खेलते है।

सावन मास के पूर्णिमा के दिन रक्षाबंधन का त्यौहार मनाते है इस दिन बहन अपने भाई के कलाई पर राखी बांधती है। पकवान खिलाती है और अपने भाई के लंबी उम्र एवं कुशलता का कामना करती है। यह त्यौहार भाई–बहन के प्रेम का त्यौहार है। और भाई भी अपनी बहनों को उपहार देते है।

श्रावण मास के बाद भाद्र या भादों मास आता है। भादों में कृष्ण पक्ष प्रथमा को भोजली मनाते है। अर्थात् राखी के दूसरे दिन भोजली पर्व होता है। भोजली पर्व के आठ या दस दिन पहले पर्व के दिन तक निकल जाये भोजली पर्व मित्रता का पर्व है ''ओ ठेनी गंगा लहर तुरंगा'' भोजली से संबंधित गीत है। बाद में भोजली को विसर्जित कर दिया जाता है।

भाद्र पक्ष के चतुर्थी को संकट चतुर्थी के नाम से मनाया जाता है। इसे बहुला चौथ के नाम से भी जाना जाता है। इसमें गोय और बछड़े की पूजा की जाती है। छत्तीसगढ़ में इस दिन माता अपने पुत्र की लंबी आयु, अच्छे स्वास्थ्य, धन, ऐश्वर्य, उन्नति के लिए संकट चतुर्थी का व्रत रखती है। चंद्रमा देखकर पूजा व्रत तोड़ती है।

हलषष्ठी– हलषष्ठी का व्रत भादों मास के कृष्ण पक्ष को षष्ठी तिथि को भगवान श्री कृष्ण के ज्येष्ठ भ्राता श्री बलराम के जन्मोत्सव के रूप में मनाया जाता है। इस दिन महिलाये महुआ वृक्ष की टहनी का दातून करती है।

हलषष्ठी व्रत समूह में किया जाता है माताएँ अपने बच्चों की दीर्घायु के लिए व्रत रखती है।

हलषष्ठी के लिए लाई, पसहर चावल, कांसी का फूल, बॉस निर्मित टोकनी, फूलबत्ती, मिटटी की चुकिया, श्रृंगार सामग्री, भैंस का दूध, दही, घी, परसा पान का दोना पत्ता, आदि से पूजा करती है। इस दिन घर के ऑगन में गड्ढा खोदकर कृत्रिम तालाब (सगरी) तालाब बनाया जाता है। जिसे कांसी के फूल से सजाया जाता है। माताएँ अपने–अपने घरों से मिट्टी के खिलौने, गेड़ी, शिवलिंग, गौरी–गणेश, कार्तिकेय नंदी बनाकर लाती है। जिसे सगरी के घाट में रखकर कलश रखकर फिर सगरी में बेल पत्र, भैंस का दूध, दही, घी, फूल, लाई, महुआ का फूल आदि चढ़ाकर हलषष्ठी माई की पूजा कर प्रचलित छः कथायें सुनती है। और फिर आरती करती है। पूजा के बाद माताएँ नये कपड़ा का टुकड़ा सगरी के जल में डुबाकर घर ले जाती है और अपने बच्चों के कमर पर छह बार छुआती है इसे पोती मारना कहते है, पूजा के बाद लाई, महुआ और नारियल को एक–दूसरे को बांटते है।

फलाहार के लिए पसहर का चावल,, छः प्रकार की भाजी पीतल के बर्तन में बनाती है।

पलास की टहनी को चम्मच के रूप मे प्रयोग किया जाता है। छः प्रकार की भाजियों को खमरछठ मिर्ची और पानी में पकाया जाता है। छौंकने के लिए भैंस के घी का ही प्रयोग किया जाता है। इस भोजन को पहले छः प्रकार के जानवरों जैसे – कुत्ते, बिल्ली, पक्षी, गाय, भैंस और चींटियों के लिए दही के साथ पलास के पत्ते में परोसा जाता है, फिर व्रत करने वाली माताएँ भी पलाश के पत्ते पर ही भोजन करती है।

भाद्र पक्ष अष्टमी को कृष्ण जन्माष्टमी का त्यौहार आता है। इस दिन कृष्ण भगवान को पंजरी, माखन, मिश्री एवं फलों का भोग लगाते है। कृष्ण जन्म उत्सव भी बहुत ही जोर–शोर से छत्तीसगढ़ में मनाया जाता है। दूसरे दिन दही लूट होता है। जिसे दही फोड के नाम से भी जाना जाता है।

भादों के अमावस्या के दिन पोला मनाते है। इसमें किसान अपने बैलों की पूजा करते है अपने गाय–बैलों को सुन्दर सजाकर रखते है बैल दौड़ भी होता है। ठेठरी, कुरमी बनाते है। तीज के पहले दिन करू भात खीरा और नारियल खाते है। भादों के तृतीया को हरितालिका मनाते है हरितालिका या तीज का त्यौहार छत्तीसगढ़ का प्रमुख त्यौहार है। सुहागिने इस दिन अपने पति के दीर्घायु के लिए निर्जला व्रत रखती है। कुँवारी कन्यायें भी अच्छे पति की कामना में निर्जला व्रत रखती है। महिलाएँ चाहे कितनी भी उम्र की क्यो ना हो अपने मायके जाने के लिए लालायित रहती है। जिसका उत्साह देखते ही बनता है। रात को सब एकत्र होकर मिटट्ी का शिव पार्वती बनाकर एक बड़े से परात में रखकर फुलहरा सजाकर श्रृंगार सामग्री, कपड़ा, फल, बेलपत्ता आदि से पूजा करते है, भजन गाते है, और रतजगा करते है।

दूसरे दिन फिर शिव पार्वती की पूजाकर उसे तालाब या नदी में विर्सजित करती है फिर अपना व्रत खुजर दूध को नीबू डालकर फाड़कर उसमें शक्कर मिलाकर बनाया गया पेय पदार्थ पी कर अपना व्रत तोड़ती है यह सुपाच्य होता है। तीज के दूसरे दिन गणेश चतुर्थी होता है। गणेश की मूर्ति स्थापित करते है। बच्चे बड़े ही उत्साह से गणेश उत्सव मनाते है इसमें रात्रि के समय सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करते है। अनंत चतुदर्शी के दिन हवन एवं महाआरती की जाती है महाआरती के बाद प्रसाद वितरण होता है। दूसरे दिन विसर्जन किया जाता है। गणेश चतुर्थी के दूसरे दिन पितृपक्ष लग जाता है इस दिन अपने सभी पूर्वजों का आह्वान करते है। नदी में जाकर पितृ तर्पण करते है। पिण्ड दान करते है, पितरों के नाम से ब्राहम्णों को भोजन कराया जाता है और दान दक्षिण देते है।

पितृ विसर्जन के दूसरे दिन नावरात्रि का त्यौहार प्रारंभ होता है पूरे नौ दिन तक अलग–अलग रूप में माता का श्रृंगार किया जाता है। पूरे नवरात्रि के दौरान नौ दिन माता की सेवा एवं भजन किया जाता है। ज्योति कलश की स्थापना की जाती है। नवें दिन हवन कर कन्या भोज कराते है। कन्या भोज कर प्रसाद वितरण किया जाता है। दूसरे दिन ज्योत एवं ज्वारा का विसर्जन होता है।

दूसरे दिन दशहरा का त्यौहार मनाते है। यह त्यौहार बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में मनाया जाता है। रावण दहन के बाद सोन पत्ता एक दूसरे को देकर बधाईयॉ दी जाती है। बस्तर में दशहरा रावणवध के स्थान पर रथ निकालते है।

कार्तिक मास को मोक्ष का द्वार कहा जाता है। कार्तिक शुक्ल पक्ष एवं कृष्ण पद्वा में छत्तीसगढ़ के विभिन्न संस्कृतियों को एक साथ जोड़ने का कार्य करती है। कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष में प्रथमा तिथि से अमावस्या तिथि तक विभिन्न त्यौळार जुड़े हुए है।

कार्तिक मास में कार्तिक स्नान का विशेष महत्व है। कार्तिक मास में कार्तिक स्नाम दान एवं दीप दान का बहुत महत्व है। त्यौहारों में सबसे पहले करवॉ चौथ, अहोई अष्टमी, रंभा एकादशी, द्वादशी, गोवर्धन पूजा, भाई–दूज, छठ, गौ पूजन, ऑवला नवमी, देवउठनी, एवं तुलसी विवार, बैकुण्ठ चतुर्दशी एवं कार्तिक पूर्णिमा पर देव

दीपावली मनाया जाता है। कार्तिक मास को शास्त्रों में उत्तम मास बताया है क्योंकि इस माह भगवान विष्णु निद्रा से जागते है। स्कंद पुराण के अनुसार भगवान शिव एवं माता पार्वाती के पुत्र कार्तिकेय ने तारकासुर का वध इसी माह में किया था, इसलिए इसका नाम कार्तिक पड़ा। साथ ही भगवना विष्णु नारायण रूप में धरती पर जल में विश्राम करते हे। इस मास में पवित्र नदियों में स्नान , दान, उपासना, हवन, अभिषेक क विशेष महत्व है। कार्तिक मास में ब्रम्ह मुहूर्त में स्नान करने से धरती के सभी तीर्थो का पुण्य प्राप्त होता है। इस मास में की गई प्रार्थना सीधे देवों तक पहुंचती है इसलिए इसे मोक्ष का द्वारा भी कहा गया है।

कार्तिक के चतुर्थी को बछारत मनाया जाता है। गाय की पूजा करते है।

कार्तिक मास के त्रयोदशी को धनतेरस होता है। इस दिन घर में कुछ भी धातु का नया बर्तन या सोना, चॉदी खरीदते है। शाम को दरवाजे पर तेरह दिया जलाया जाता है।

फर दूसरे दिन नरक चतुर्दशी या रूप चतुर्दशी मनाते है। इस दिन यम देवता की पूजा की जाती है। मिट्टी के चौदी दियों को रंगोली से चौदह खंड बनाकर पूजा करते है।

कार्तिक मास के अमावस्या को दीपावली का त्यौहार मनाते हे। इस दिन भगवान राम चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात् आज के ही दिन अयोध्या वापस आये थे इस खुशी में दीपावली का त्यौहार मनाया जाता है। पूरे घर में रोशनी की जाती है। रंगोली बनाई जाती है अच्छे–अच्छे पकवान बनाये जाते है। दीवाली की सुबह मंदिर, नदी, तालाब, चौराहा, पीपल का वृक्ष में दिया जलाया जाता है। शाम को लक्ष्मी जी की पूजा की जाती है। पटाखें फोड़ते है फुलझलिड़यॉ जलाते है। नये वस्त्र पहनते है बड़े ही प्रफ्फुलित मन से यह त्यौहार मनाते है। अपने आस–पड़ोस एवं घर परिवार में प्रसाद देते है और अपने बड़ों का आशीर्वाद लेते है।

दीवाली के दूसरे दिन अन्नकूट होता हे। छप्पन प्रकार का भोजन बनाकर भोग लगाया जाता है। गोबर से मूर्ति बनाते है। गॉव में इस दिन गोवर्धन की विशेष पूजा की जाती है। गाय, बैल, बछड़ों को सोहाई पहनाते है। रावत दोहा गाकर डंडा नाचते है।

बलासपुर का राउत नाचा बहुत प्रसिद्ध है।

फिर अगले दिन भाई पूजा का त्यौहार मनाते है। गौरा–गौरी की पूजा की जाती है। फिर विसर्जन कर दिया जाता है।

गोड़ स्त्रियॉ सुआ नृत्य करती है यह टोली बनाकर की जाती है। यह संपूर्ण छत्तीसगढ़ में दीपावली के पूर्व से गाई जाती है जो देवउठनी एकादशी तक चलता है।

अगहन में हर गुरूवार को अगहन गुरूवार मनाते है। महिलाएँ एक दिन पहले ही घर साफ–सफाई कर लेती है। चॉवल आटा यहॉ कभी चुना पानी से लक्ष्मी जी के पैर, शंख, चक्र व अनेक प्रकार की अल्पना बनाती है। केला व अन्य पीले वस्तुओं से लक्ष्मी जी की पूजा करती है व व्रत भी रखती है यह माह भगवान विष्णु का सबसे प्रिय महीना माना जाता है। इस माह का प्रमुख त्यौहार राम जानकी विवाह, गंगा शीर्ष अमावस्या, मोक्षदा एकादशी, गीता जयंती, मार्गशीर्ष पूर्णिमा दत्तात्रेय जयंती है।

पौष माह में सूर्य की उपासना का विशेष महत्व माना जाता है। इस मास प्रत्येक रविवार व्रत व उपवास रखने, तिल, चॉवल की खिचड़ी का भोग लगाते हे।

माघ मास में स्नान, दान, उपासना, तिल का दान आदि करते है।

मकर संक्राति में तिल का लड्डू बनाकर भोग लगाते है व प्रसाद वितरण करते है। खिचड़ी भी बनाते है लोग कंबल दान भी करते है। और अंतिम माह फाल्गुन का होता है यह माह कृष्ण को समर्पित होता है। इस समय बसंत का मौसम होता है। इस माह जानकी जयंती (सीता अष्टमी), विजया एकादशी, महाशिवरात्रि, फाल्गुनी अमावस्या, होलिका दहन व होली त्यौहार मनाते है।

होली त्यौहार बड़े प्रेम व सौहार्द्र के साथ छत्तीसगढ़ में मनाया जाता है। इस तरह हर त्यौहार में प्रेम, आपसी भाईचारा सौहार्द्र एवं नूतनता लिए हुए है। हर त्यौहार का अपना सामाजिक महत्व है। हर त्यौहार एक दूसरे को जोड़ने का कार्य करता है। अपने परिवार, कुटुम्ब अपने आस पड़ोस को आपस में पिरोये हुए मन के तारों को जोड़ते हुए एक–दूसरे का सम्मान करते हुए बड़े ही धूम–धाम से सभी त्यौहारों का आनंद लेते है और मनाते है। यह त्यौहार ही तो है, जब लोग अपने घरों में वापस आते है। आनंद खुशियॉ मनाते है। वर्ना आज की आपाधापी में सब अपने में ही मगन रहते है। एक दूसरे को पहचानते नही पर त्यौहार सभी को एकता के सूत्र में बॉध देता है।